विद्या ददाति विनयम्

संजीव®

सरसा पाठशाला

सरसा काव्यशास्त्र

हिन्दी

19 सितम्बर 2025 को जारी नवीनतम सिलेबस पर आधारित

प्रथम श्रेणी

शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु

मुख्य आकर्षण

- सम्पूर्ण पाठ्य-सामग्री
- महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न
- महत्त्वपूर्ण बिंदु एवं सारांश

काव्यांग विवेचन

शब्द-शक्ति, काव्य गुण, काव्य दोष, काव्य लक्षण, रस, काव्य हेतु, अलंकार, काव्य प्रयोजन, रसनिष्पत्ति, साधारणीकरण, वक्रोक्ति सिद्धांत, ध्वनि सिद्धांत, छंद, अनुकरण सिद्धांत, त्रासदी सिद्धांत, उदात्त सिद्धांत

लेखक

कैलाश नागौरी

(सरसा पाठशाला ऐप)

वॉट्सऐप- 9660669988

संपादक

डॉ. दीपेश कुमार सैनी

संजीव प्रकाशन, जयपुर

• **प्रकाशक :**
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर–03
website : www.sanjivprakashan.com

• © **किरण** (सरसा पब्लिकेशन)

• **संस्करण**– 2026

• **मूल्य : ₹180**

• **लेजर कम्पोजिंग :**
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

• **मुद्रक :** पंजाबी प्रेस, जयपुर

❑ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं–
Email : sanjeevcompetition@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग, संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

❑ इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीक या तरीके–इलेक्ट्रोनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है।

❑ हमने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता या त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

❑ सभी प्रकार के प्रतिवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

अनुक्रमणिका

क्र.स.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	हिंदी काव्यशास्त्र : एक परिचय	05
2.	शब्द-शक्ति	10
3.	काव्य गुण	20
4.	काव्य दोष	24
5.	अलंकार	30
6.	छंदशास्त्र	56
7.	काव्य रस एवं रसावयव	65
8.	काव्य हेतु	78
9.	काव्य लक्षण	84
10.	काव्य प्रयोजन	88
11.	रस निष्पत्ति	92
12.	साधारणीकरण	97
13.	ध्वनि सिद्धांत	100
14.	वक्रोक्ति सिद्धांत	109
15.	अरस्तू-अनुकरण सिद्धांत एवं त्रासदी सिद्धांत	119
16.	लोंजाइनस का उदात्त सिद्धांत	125

स्कूल व्याख्याता एवं वरिष्ठ अध्यापक हिंदी के लिए
संजीव व सरसा पाठशाला की अति महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

- सारिका–प्रथम श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु
- चित्रा–द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु
- रूचिरा–द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु
- कविमाला वस्तुनिष्ठ
- हिंदी साहित्य का सरल एवं सुबोध इतिहास
- साहित्य मंजरी- हिंदी साहित्य एक्जाम रिव्यू
- आरपीएससी-32 हिंदी सॉल्वड पेपर्स 2010 से 2025
- सामान्य हिंदी व्याकरण

॥ संपादकीय ॥

राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोज्य स्कूल व्याख्याता हिंदी के नवीनतम सिलेबस में खंड द्वितीय: स्नातक स्तर एवं खंड तृतीय: स्नाकोत्तर स्तर के हिंदी काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के लिए यह पुस्तक प्रस्तुत की गई है। संपूर्ण पाठ्य-सामग्री को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है कि विद्यार्थियों के लिए पाठ्य-सामग्री को ग्राह्य करना अत्यंत सरल होगा और उनकी रुचि भी बराबर बनी रहेगी। पाश्चात्य काव्यशास्त्र जो कि अंग्रेजी में है और हिंदी काव्यशास्त्र जो कि संस्कृत में है, अत: सरल हिंदी भाषा में काव्यांग परिचय प्रस्तुत करना अत्यंत कठिन कार्य रहता है। सभी काव्यांगों को बहुत ही सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है तथा भाषणबाजी से बचते हुए केवल अनिवार्य वर्णन ही किया गया है। पाठ के अंत में अभ्यास के लिए वस्तुनिष्ठ प्रश्न भी दिए गए हैं। इन सब रुचियों का ध्यान रखते हुए तैयारी करने वाले विद्यार्थियों हेतु यह सरसा काव्यशास्त्र पुस्तक तैयार की गई है। संपादन कार्य के दौरान मैंने इसमें परिभाषाओं एवं उदाहरणों का बेहतरीन संकलन किया है जो विद्यार्थियों के लिए निश्चित रूप से उपयोगी होगी।

डॉ. दीपेश कुमार सैनी

॥ शुभकामनाएँ ॥

सभी विद्यार्थियों को बेहतरीन तैयारी के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ! पुस्तक के लेखन के बाद डॉ. दीपेश कुमार सैनी के अथक प्रयासों से प्रूफ रीडिंग एवं पाठ्य-सामग्री का संपादन कार्य हुआ है, जिससे प्रस्तुतिकरण का तरीका और भी रोचक हो गया है।

टाईपिंग एवं प्रूफ रीडिंग में पूर्णतया सावधानी बरती गई है। कहीं भी त्रुटि की संभावना लगभग नगण्य हैं, फिर भी मानवीय स्वभाववश यदि कहीं त्रुटि हो गई है तो आप इसे अनदेखा नहीं करें, हमें वाट्सऐप 9660669988 पर बताएँ, हम इसमें सुधार करेंगे। साथ ही विद्यार्थियों के सहयोग के लिए हम सदैव तत्पर हैं। यदि आपको इस पुस्तक के किसी तथ्य में शंका हो अथवा समझ से परे हो तो आप हमें वाट्सऐप पर चर्चा कर सकते हैं, तथ्यों को सरलता से समझने के लिए आप लेखक से सीधा संचार कर सकते हैं। हमारा आपसे अनुरोध रहेगा कि इस पुस्तक में और किसी प्रकार रोचक बना सकते हैं, हमें सुझाव जरूर दीजियेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं आपके बेहतरीन सुझावों से वंचित नहीं रहूँगा।

धन्यवाद!

कैलाश नागौरी (सरसा पाठशाला)

1 अध्याय हिंदी काव्यशास्त्र : एक परिचय

काव्यशास्त्र का सीधा अर्थ है- काव्य का शास्त्र। काव्यशास्त्र में काव्य की विधाओं एवं इसके स्वरूप का अध्ययन किया जाता है। आचार्य भरतमुनि (ई.पू. दूसरी सदी) काव्यशास्त्र के प्रवर्तक माने जाते हैं। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र काव्यशास्त्र का प्रथम ग्रंथ माना जाता है। इसमें कुल **36 अध्याय** और **5000 श्लोक** हैं। वात्स्यायन ने काव्यशास्त्र के लिए **क्रियाकलाप** नाम दिया था, जिसका अर्थ है- **काव्य सृजन की पद्धति।** आचार्य दंडी ने काव्यशास्त्र को **काव्य लक्षण** कहा है। आचार्य वामन, भामह, रुद्रट और उद्भट ने काव्यशास्त्र को **अलंकार शास्त्र** कहा है। आचार्य राजशेखर ने काव्यशास्त्र के लिए **साहित्य विधा** का नाम दिया था। सबसे पहले **आचार्य भोजराज** ने ही काव्यशास्त्र के लिए **''काव्यशास्त्र''** नाम दिया था।

संस्कृत भाषा संपूर्ण भारतीय वाङ्मय का आधार रही है। पहले वैदिक संस्कृत भाषा रही थी। कठिन व्याकरण नियमों की वजह से सरल भाषा के रूप में **वैदिक संस्कृत** से **लौकिक संस्कृत** भाषा बनी। लौकिक संस्कृत की व्याकरण भी कठिन होने से सभी रचनाएँ **प्राकृत,** फिर **पालि** और बाद में **अपभ्रंश** में की जाने लगी। लगभग एक हजार साल पहले कवि-आचार्य अपभ्रंश की कठिन व्याकरण से **हिंदी** की सरल व्याकरण की ओर उन्मुक्त हुए। इस प्रकार कह सकते हैं कि भारतीय काव्यशास्त्र में दो प्रकार के आचार्य आते हैं- संस्कृत आचार्य और हिंदी आचार्य। लेकिन संपूर्ण रूप से इसे संस्कृत काव्यशास्त्र कहा जाता है, क्योंकि सभी भारतीय भाषाओं का आधार संस्कृत साहित्य ही है।

संस्कृत काव्यशास्त्र के विकास को चार भागों में बांटा जाता है-

(1) प्रवर्तन काल - 500 ई.पू. से 500 ई. तक।
(2) प्रतिपादन काल- 500 ई. से 1000 ई. तक।
(3) व्याख्या काल- 1000 ई. से 1600 ई. तक।
(4) भाषा काल- 1600 ई. से अब तक।

✍ संस्कृत काव्यशास्त्र की प्रमुख रचनाएँ एवं आचार्य-

(1) नाट्यशास्त्र (36 अध्याय)-ई.पू. दूसरी सदी - भरतमुनि

भरतमुनि काव्यशास्त्र के प्रवर्तक आचार्य माने जाते हैं। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ **नाट्यशास्त्र** काव्यशास्त्र का आदिग्रंथ है। नाट्यशास्त्र में भरतमुनि ने काव्य के सभी तत्वों का विस्तार से वर्णन किया है। इसी ग्रंथ में उन्होंने रस सूत्र दिया था-

''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।''

(2) अग्निपुराण-अग्निपुराण के रचयिता **वेदव्यास** हैं। नाट्यशास्त्र के बाद अग्निपुराण काव्यशास्त्र विवेचन का **द्वितीय ग्रंथ** माना जाता है। इस ग्रंथ में अध्याय 336 से 347 तक काव्यशास्त्र के अंगों काव्य लक्षण, काव्य भेद, रस, भाव, नायक-नायिका भेद, गुण, दोष, अलंकार, रीति, वृत्ति आदि का विस्तृत वर्णन है।

(3) काव्यालंकार (6 परिच्छेद)- 6वीं सदी - आचार्य भामह (अलंकारवादी आचार्य)-भामह कश्मीर के निवासी थे और इनका समय लगभग 550 ई. के आस-पास (6वीं सदी) माना जाता है। भामह का प्रसिद्ध ग्रंथ **काव्यालंकार** है। इस ग्रंथ में उन्होंने अलंकारों का विस्तृत विवेचन किया। अलंकार संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य भामह ने अपने ग्रंथ 'काव्यालंकार' में कुल 38 अलंकारों का वर्णन किया है। भामह ने अलंकारों का महत्त्व बताते हुए कहा है- **''न कान्तमपि निर्भूषम् विभाति वनितामुखम्''** अर्थात् जिस तरह स्त्री का सुंदर मुख भी आभूषणों के बिना सौंदर्य रहित होता है, उसी प्रकार अलंकार रहित काव्य भी शोभारहित होता है। भामह के काव्यलंकार में कुल **छह परिच्छेद** और लगभग 400 श्लोक हैं। इसी ग्रंथ पर उद्भट ने भामह विवरण नाम से टीका लिखी है।

(4) काव्यादर्श (4 परिच्छेद)-7वीं सदी-आचार्य दंडी (अलंकारवादी आचार्य)

दंडी का प्रसिद्ध ग्रंथ **काव्यादर्श** है। आचार्य दंडी **पल्लव-नरेश सिंहविष्णु** के सभा-पंडित थे। आचार्य दंडी प्रसिद्ध पंडित **भारवी** के प्रपौत्र थे। आचार्य दंडी ने काव्यादर्श ग्रंथ में **अलंकारों** का विवेचन किया हैं। इस ग्रंथ में **तीन परिच्छेदों** में लगभग 660 पद हैं। प्रथम परिच्छेद में काव्य-भेद, लक्षण, हेतु, रीति, गुण आदि का विवेचन है। दूसरे परिच्छेद में 35 अलंकारों का विवेचन है और तीसरे परिच्छेद में चित्रकाव्य, चित्रबंध, काव्य प्रहेलिका, दस प्रकार के दोष आदि का वर्णन है।

(5) काव्यालंकार सूत्र (5 परिच्छेद)-8वीं सदी का उत्तरार्द्ध व 9वीं सदी का पूर्वार्द्ध- आचार्य वामन- आचार्य वामन प्रमुख अलंकारवादी आचार्य हैं। ये कश्मीर-नरेश जयादित्य के मंत्री थे। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ **काव्यालंकार**

सूत्र है। ये **रीति संप्रदाय** के प्रवर्तक माने जाते हैं। उन्होंने **रीति को काव्य की आत्मा** घोषित किया। काव्यालंकार सूत्र ग्रंथ के तीन भाग हैं- **सूत्र, वृत्ति और उदाहरण।** संपूर्ण ग्रंथ **पाँच अधिकरण** में है और प्रत्येक अधिकरण अध्यायों में बंटा है। इस ग्रंथ में कुल बारह अध्याय और 318 सूत्र हैं। काव्यालंकार सूत्र ग्रंथ सूत्र शैली में रचा गया है। इसमें काव्य गुण, अलंकार-भेद, शब्द-शुद्धि आदि का विस्तृत विवेचन है।

(6) काव्यालंकार सारसंग्रह-8वीं सदी का उत्तरार्द्ध व 9वीं सदी का पूर्वार्द्ध - आचार्य उद्भट–आचार्य उद्भट कश्मीर के निवासी थे और राजा **जयादित्य** के मंत्री थे। इनका समय 779 से 813 ई. माना जाता है। आचार्य उद्भट अलंकारवादी आचार्य हैं। उन्होंने अपने ग्रंथ में **41 अलंकारों** का विवेचन किया है। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ **काव्यालंकार सार-संग्रह** है। इसमें छह वर्ग और 75 कारिकाएँ हैं। आचार्य उद्भट ने श्लेष अलंकार को प्रमुखता दी है।

(7) काव्यालंकार-9 वीं सदी-रुद्रट–आचार्य रुद्रट का अन्य नाम शतानंद है। आचार्य रुद्रट अलंकारवादी आचार्य हैं। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ **काव्यालंकार** है। इस ग्रंथ में 16 अध्यायों में 734 श्लोक हैं। इस ग्रंथ में 12 अध्याय अलंकारों से संबंधित हैं और शेष 4 अध्याय रस से संबंधित हैं। आचार्य रुद्रट ने कुल **58 अलंकार** माने हैं और वास्तव, औपम्य, अतिशय और श्लेष को सभी का मूल तत्व स्वीकार किया। आचार्य रुद्रट ने गुणों के शब्दगत के दस भेद और अर्थगत के दस भेद मानकर **बीस प्रकार के गुण** बताए हैं।

(8) ध्वन्यालोक-9 वीं सदी का उत्तरार्द्ध-आनन्दवर्धन–आनंदवर्धन कश्मीर के निवासी थे और **अवन्तिवर्मा** के सभापंडित थे। इनको **राजानक** की उपाधि प्राप्त थी। आनन्दवर्धन ध्वनि संप्रदाय के आचार्य हैं। इन्होंने **ध्वनि सिद्धांत** की स्थापना की। इन्होंने ध्वनि को काव्य की आत्मा माना है। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ **ध्वन्यालोक** है। ध्वन्यालोक ग्रंथ में **चार उद्योत हैं। प्रथम उद्योत** में ध्वनि, ध्वनि के विरोधी मतों का खंडन और ध्वनि की व्याख्या है, **दूसरे उद्योत** में ध्वनि के भेदों के विवेचन के साथ गुण व अलंकारों का वर्णन है, **तीसरे उद्योत** में व्यंजना के आधार पर ध्वनि के महत्त्व का विवेचन है और **चौथे उद्योत** में प्रतिभा की अनन्तता का विवेचन है।

(9) काव्यमीमांसा-9 वीं सदी उत्तरार्द्ध व 10वीं सदी का पूर्वार्द्ध- राजशेखर–राजशेखर का समय 10वीं सदी का पूर्वार्द्ध है। ये कन्नोज-नरेश महेन्द्रपाल के गुरु थे। इनकी पत्नी चौहान वंश की विदुषी अवन्तिसुंदरी थी। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ **काव्यमीमांसा** है। इनके इस ग्रंथ को **काव्यशास्त्र का कोश** माना जाता है। इस ग्रंथ में **18 अध्याय** हैं। काव्यमीमांसा ग्रंथ पांडित्यपूर्ण शैली में रचा गया है।

(10) दशरूपक-10 वीं सदी - धनञ्जय–धनञ्जय का प्रसिद्ध ग्रंथ दशरूपक है। इस ग्रंथ में **चार प्रकाश** हैं। इनके भाई धनिक ने इस पर **अवलोक** नाम से टीका लिखी है। इनका ग्रंथ दशरूपक मुख्यत: नाट्यशास्त्र का ग्रंथ है।

(11) ध्वन्यालोकलोचन-10 वीं सदी का उत्तरार्द्ध व 11वीं सदी का पूर्वार्द्ध- अभिनवगुप्त–अभिनवगुप्त अलंकारवादी आचार्य हैं। इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ **ध्वन्यालोकलोचन** है। इनके कुल तीन ग्रंथ हैं- ध्वन्यालोकलोचन, अभिनव भारती और काव्य कौतुक विवरण। इनका ग्रंथ **ध्वन्यालोकलोचन** आनंदवर्धन के ध्वन्यालोक की टीका है, **अभिनव भारती** ग्रंथ नाट्यशास्त्र की टीका है और **काव्य कौतुक विवरण** भट्टतौत के काव्य कौतुक ग्रंथ की टीका है।

(12) वक्रोक्तिजीवितम्-10-11 वीं सदी - कुंतक–आचार्य कुंतक ने वक्रोक्ति सिद्धांत की स्थापना की। इन्होंने वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा माना है। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ वक्रोक्तिजीवितम् है। यह ग्रंथ चार उन्मेषों में विभाजित है। इस ग्रंथ मे इन्होंने वक्रोक्ति का स्वरूप, अर्थ, भेद, सुकुमार मार्ग, विचित्र मार्ग व मध्यम मार्ग और वक्रता के छह भेदों का विस्तृत विवेचन किया है।

(13) सरस्वती कंठाभरण-11 वीं सदी-भोजराज–आचार्य भोजराज धारा के नरेश थे। इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ सरस्वती कंठाभरण है। सरस्वती कंठाभरण में पाँच परिच्छेद हैं। इनका दूसरा ग्रंथ श्रृंगार प्रकाश भी है। श्रृंगार प्रकाश ग्रंथ में छत्तीस अध्याय हैं।

(14) व्यक्तिविवेक-11 वीं सदी-महिमभट्ट–आचार्य महिमभट्ट का प्रसिद्ध ग्रंथ व्यक्तिविवेक है। ये ध्वनि विरोधी आचार्यों में प्रमुख हैं। इन्हें राजानक की उपाधि प्राप्त थी। इन्होंने अपने ग्रंथ में ध्वनि का खंडन करके इसका अनुमान में अंतर्भाग किया है।

(15) औचित्यविचार चर्चा, कविकंठाभरण-11 वीं सदी- क्षेमेन्द्र–आचार्य क्षेमेन्द्र औचित्य संप्रदाय के प्रवर्तक हैं। इनका सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रंथ औचित्यविचार चर्चा है। इसमें उन्होंने औचित्य को काव्य की आत्मा माना है। इस ग्रंथ में 19 कारिकाएँ हैं। इनका दूसरा प्रसिद्ध ग्रंथ कविकंठाभरण है। इस ग्रंथ में 55 कारिकाएँ पाँच संधियों में हैं।

(16) काव्यप्रकाश-11 वीं सदी-मम्मट–आचार्य मम्मट ही प्रथम आचार्य हैं जिन्होंने शांत रस को स्वतंत्र रस के रूप में सबसे पहले मान्यता दी। आचार्य मम्मट कश्मीर के निवासी थे। इनका समय 1050 से 1000 ई. माना जाता है। आचार्य मम्मट को ध्वनि प्रतिष्ठापक आचार्य कहा जाता है। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ काव्यप्रकाश है। यह ग्रंथ दस प्रकाशों में विभाजित है। काव्यप्रकाश ग्रंथ में काव्य लक्षण, हेतु, प्रयोजन, भेद, दोष, गुण, अलंकारों आदि का विस्तृत विवेचन है।

मम्मट ने 61 अलंकारों का विस्तृत वर्णन किया है। आचार्य मम्मट ने सूत्र शैली में काव्यप्रकाश ग्रंथ की रचना की है। आचार्य मम्मट ने रस निष्पत्ति, त्रिगुणवाद, गुण व अलंकार में भेद, ध्वनि सिद्धांत की प्रतिष्ठा आदि के संबंध में मौलिक विचार व्यक्त किए।

(17) अलंकार सर्वस्व-12 वीं सदी-रुय्यक– आचार्य रुय्यक अलंकारवादी आचार्य हैं। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ अलंकार सर्वस्व है। इस ग्रंथ में इन्होंने 82 अलंकारों का विवेचन किया है साथ ही सात नये अलंकारों का अन्वेषण किया। इन्होंने मम्मट के काव्यप्रकाश पर संकेत नाम से टीका लिखी। इनका दूसरा ग्रंथ साहित्य मीमांसा है। इस ग्रंथ में कवि भेद, गुण, दोष, विभिन्न प्रदेशों की स्त्रियाँ, ऋतु क्रीड़ा व पर्व पर विशद विवेचन है।

(18) चन्द्रालोक-12 वीं सदी-जयदेव–आचार्य जयदेव अलंकारवादी आचार्य थे। इनका लोकप्रिय ग्रंथ चंद्रालोक है। यह दस मयूखों में अनुष्टुप छंद में रचित है। इनके ग्रंथ चंद्रालोक में काव्यशास्त्र का संपूर्ण विवेचन है। इन्हें पीयूषवर्ष जयदेव कहा जाता है।

(19) रसमंजरी-13-14 वीं सदी-भानुदत्त–भानुदत्त मिथिला के निवासी थे लेकिन उनका साहित्य-साधना स्थल प्रयागराज रहा है। भानुदत्त राजा वीरभानु के आश्रित कवि थे। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ रसमंजरी है। रसमंजरी में काव्यशास्त्र का वर्णन है। यह नायिका-भेद का प्रमुख ग्रंथ है।

(20) साहित्य दर्पण-14 वीं सदी-विश्वनाथ–आचार्य विश्वनाथ का समय 1300 से 1350 ई. के मध्य है। इनका लोकप्रिय ग्रंथ साहित्य दर्पण है। इस ग्रंथ में दस परिच्छेद हैं। आचार्य विश्वनाथ रसवादी आचार्य थे। इन्होंने रस को काव्य की आत्मा माना है।

(21) रस गंगाधर-17वीं सदी-जगन्नाथ–आचार्य जगन्नाथ बादशाह शाहजहाँ के सभापंडित थे। शाहजहाँ ने इनको पंडितराज की उपाधि दी थी। इनका लोकप्रिय ग्रंथ रस गंगाधर है।

(22) अलंकार कौस्तुभ-18वीं सदी-विश्वेश्वर पंडित–विश्वेश्वर पंडित का प्रसिद्ध ग्रंथ अलंकार कौस्तुभ है। इस ग्रंथ की रचना उन्होंने पंडितराज जगन्नाथ की शैली में की है। इन्होंने अप्पय दीक्षित और पंडितराज जगन्नाथ के मतों का खंडन कर अलंकारों की बढ़ती संख्या पर रोक लगाने का प्रयत्न किया।

हिंदी के आचार्य कवि

(1) कृपाराम-हिंदी रीति परम्परा के प्रथम आचार्य कवि कृपाराम है। इनका प्रसिद्ध व एकमात्र ग्रंथ हिततरंगिणी है। यह ग्रंथ पाँच तरंगों में विभाजित है और इसमें 400 छंद हैं। यह ग्रंथ नायिका-भेद का प्रमुख ग्रंथ है।

(2) सूरदास-प्रसिद्ध कृष्णभक्त कवि सूरदास अष्टछाप के प्रमुख कवि हैं। सूरदास ने साहित्य लहरी में नायिका-भेद व अलंकारों का वर्णन किया है।

(3) नंददास-नंददास भी कृष्णभक्त एवं अष्टछाप के कवि थे। काव्यशास्त्र से संबंधित इनका ग्रंथ रसमंजरी (1550 ई.) है।

(4) केशवदास-आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी रीति का आरम्भ चिंतामणि से माना है लेकिन बाबू गुलाबराय ने केशवदास को ही रीतिकाल का प्रथम आचार्य-कवि माना है। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ रसिकप्रिया और कविप्रिया है। इसके साथ ही केशवदास ने छंदमाला ग्रंथ की भी रचना की है। छंदमाला के प्रथम भाग में 77 वर्णिक छंदों का और दूसरे भाग में 26 मात्रिक छंदों का वर्णन है।

(5) चिंतामणि त्रिपाठी- इनका काव्यशास्त्र से संबंधित ग्रंथ कविकुलकल्पतरु और काव्य-विवेक है।

(6) बेनी कवि-रीतिकाल के लोकप्रिय कवि बेनी कवि ने भी षड्ऋतु वर्णन व नायिका भेद की रचनाएँ की हैं।

(7) महाराज जसवंतसिंह-महाराज जसवंतसिंह ने भाषाभूषण ग्रंथ की रचना की। यह अलंकार ग्रंथ है। इस ग्रंथ में लक्षण व उदाहरण एक ही दोहे में दिए गए हैं।

(8) बिहारी-बिहारी कोई स्वतंत्र लक्षण ग्रंथ नहीं लिखा, लेकिन इनके सतसई के दोहे में रीतियाँ स्वयं सिद्ध होती गई। इसलिए ही इनको रीतिसिद्ध कवि कहा जाता है।

(9) मतिराम-मतिराम के काव्यशास्त्र से संबंधित लोकप्रिय ग्रंथ रसराज और ललित ललाम है। ललित ललाम एक अलंकार ग्रंथ है।

(10) भूषण-भूषण रीतिकाल के वीर रस के कवि हैं। इनका काव्यशास्त्र से संबंधित ग्रंथ शिवराजभूषण है। यह अलंकार ग्रंथ है। भूषण ने मम्मट के काव्यप्रकाश का रस रहस्य नाम से छायानुवाद किया है।

(11) सुखदेव मिश्र-सुखदेव मिश्र के काव्यशास्त्र से संबंधित ग्रंथ वृत्त विचार, छंद विचार, श्रृंगारलता और रसार्णव हैं।

(12) कवि देव-कवि देव के काव्यशास्त्र से संबंधित ग्रंथ भावविलास, रसविलास, शब्द रसायन और नखशिख हैं।

(13) सूरति मिश्र-सूरति मिश्र के काव्यशास्त्र से संबंधित ग्रंथ अलंकारमाला, रस रत्नमाला और रसरहस्य हैं।

(14) भिखारीदास-भिखारीदास ने रीतिकालीन कवियों में काव्यशास्त्र का विस्तृत विवेचन किया है। इनके प्रसिद्ध ग्रंथ रस सारांश, काव्य निर्णय, छंदोर्णव पिंगल, श्रृंगार निर्णय आदि ग्रंथ हैं।

(15) दूलह कवि-दूलह कवि का कविकुलकंठाभरण

अलंकार ग्रंथ है। कवि दूलह ने एक छंद में लक्षण व उदाहरण एक साथ दिए हैं।

(16) प्रताप साहि-प्रताप साहि का काव्यशास्त्र से संबंधित ग्रंथ व्यंग्यार्थ कौमुदी और काव्य विलास है।

उपर्युक्त आचार्य-कवियों के अतिरिक्त और भी खूब आचार्य-कवि हुए हैं, जिन्होंने रीति ग्रंथ लिखे हैं।

काव्यशास्त्र के क्षेत्र में आचार्यों के तीन वर्ग माने जाते हैं-

(1) उद्‌भावक आचार्य- वे आचार्य जिन्होंने काव्यशास्त्र में मौलिक सिद्धांतों का प्रवर्तन किया, उन्हें उद्‌भावक आचार्य कहते हैं। आचार्य भरतमुनि, आचार्य वामन, आचार्य भामह आदि।

(2) व्याख्याता आचार्य- वे आचार्य जिन्होंने किसी नए सिद्धांत का तो आविष्कार नहीं किया, लेकिन प्राचीन सिद्धांतों की व्याख्या कर और अधिक स्पष्ट किया, उन्हें व्याख्याता आचार्य कहते हैं। जैसे- आचार्य मम्मट, आचार्य विश्वनाथ आदि।

(3) कवि शिक्षक- वे आचार्य जिन्होंने न तो किसी नए सिद्धांत का आविष्कार किया और न प्राचीन सिद्धांत का विवेचन किया, बल्कि काव्यशास्त्र को हिंदी में अधिक सुपाठ्य रूप से प्रस्तुत किया। जैसे-केशवदास, चिंतामणि आदि।

संस्कृत काव्यशास्त्र के सम्प्रदाय

(1) रस सम्प्रदाय-भरतमुनि

रस सिद्धांत के प्रवर्तक आचार्य भरतमुनि माने जाते हैं। रस सिद्धांत का आचार्य भरतमुनि ने अपने ग्रंथ नाट्यशास्त्र में विवेचन किया है।

(2) अलंकार सम्प्रदाय-भामह

अलंकार विवेचन का क्रमबद्ध इतिहास भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से शुरू होता है। अलंकार को काव्य की आत्मा मानने वाले आचार्यों में प्रथम भामह हैं। भामह ने अपने ग्रंथ काव्यालंकार में इसका विशद विवेचन किया है। भामह ने अपने ग्रंथ में 38 अलंकारों का विवेचन किया और वक्रोक्ति को प्रमुख अलंकार माना है। आचार्य भामह के साथ दंडी, उद्‌भट, वामन, रुद्रट आदि आचार्य भी अलंकार को काव्य की आत्मा मानते हैं।

(3) रीति सम्प्रदाय-वामन

रीति संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य वामन माने जाते हैं। उन्होंने रीति को काव्य की आत्मा घोषित किया है। वामन ने तीन प्रकार की रीति मान है- वैदर्भी, गौड़ी और पाञ्चाली।

(4) ध्वनि सम्प्रदाय-आनन्दवर्धन

ध्वनि संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य आनंदवर्धन है। आनंदवर्धन के अनुसार जब शब्द और अर्थ अपने वास्तविक अर्थ का त्याग करके विशेष अर्थ अर्थात् व्यंग्यार्थ की प्रतीति कराते हैं, उसे ध्वनि कहते हैं।

(5) वक्रोक्ति सम्प्रदाय-कुंतक

वक्रोक्ति संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य कुंतक माने जाते हैं। उन्होंने वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा माना है। उनका इस संप्रदाय से संबंधित ग्रंथ वक्रोक्तिजीवितम् है।

(6) औचित्य सम्प्रदाय-क्षेमेन्द्र

औचित्य संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य क्षेमेन्द्र माने जाते हैं। उन्होंने औचित्य को काव्य की आत्मा स्वीकार किया है। आचार्य क्षेमेन्द्र के अनुसार शब्द और अर्थ किसी के निश्चय ही अनुरूप हो तो यह उचित होता है, उचित का भाव ही औचित्य है जो काव्य का प्राण है।

अभ्यास प्रश्न

1. काव्यशास्त्र के प्रवर्तक कौन माने जाते हैं-
(अ) आचार्य वामन (ब) आचार्य भरतमुनि
(स) आचार्य भामह (द) आचार्य कुंतक **(ब)**

2. नाट्यशास्त्र के रचयिता कौन है-
(अ) आचार्य वामन (ब) आचार्य भरतमुनि
(स) आचार्य भामह (द) आचार्य कुंतक **(ब)**

3. काव्यशास्त्र के लिए सबसे पहले किसने काव्यशास्त्र नाम दिया-
(अ) आचार्य आनन्दवर्धन (ब) आचार्य भरतमुनि
(स) आचार्य भामह (द) आचार्य भोजराज **(द)**

4. काव्यशास्त्र के लिए काव्य लक्षण संज्ञा का प्रयोग करने वाले आचार्य थे-
(अ) आचार्य दंडी (ब) आचार्य भरतमुनि
(स) आचार्य भामह (द) आचार्य कुंतक **(अ)**

5. किस आचार्य ने काव्यशास्त्र को साहित्य विधा नाम दिया था-
(अ) आचार्य रुद्रट (ब) आचार्य उद्‌भट
(स) आचार्य राजेश्वर (द) आचार्य महिमभट्ट **(स)**

6. भारतीय वाङ्मय की आधार भाषा है-
(अ) संस्कृत (ब) खड़ी बोली
(स) अंग्रेजी (द) प्राकृत **(अ)**

7. विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः का सूत्र किस ग्रंथ में है-
(अ) काव्यादर्श (ब) काव्यालंकार
(स) नाट्यशास्त्र (द) साहित्य दर्पण **(स)**

8. आचार्य भामह का काव्य ग्रंथ है-
(अ) काव्यादर्श (ब) काव्यालंकार
(स) नाट्यशास्त्र (द) साहित्य दर्पण **(ब)**